Il s'agit d'une interview dans le cadre de l'ouverture d'un collège privé, où la riche Sethani M. Bâi a barre sur tous car c'est elle qui a le plus financé l'opération. Dadda-jî et Neta-jî ont aussi contribué, Massab (Mastar Sahab) à un moindre degré. Gangû est le portier. L'embauche ici est celle du professeur d'anglais (système indien : les notes sont sur cent et non sur 20, la sixième correspond à peu près à la nôtre, mais on commence à 1 et on finit à 12 : la sixième s'équivaut donc. BA et MA sont les diplômes universitaires correspondant à notre licence et maîtrise)

ददाजी: (अनमने भाव से) ठीक है भाई। आप लोग बैठ जाइए। मगर चुप-चाप बैठना। (नेताजी से) हां भैयाजी, तो कराइए शुरू इंटरव्यू।

एम. बाई: (नौकर को आवाज़ लगाती है) अरे गंगू।

गंगू: (दौड़ता है) बुलाया जीजीबाई ?

एम. बाई: हां, ज़रा देखकर जाओ तो बाहर इंटरव्यू देने को कितने क्या उम्मीदवार आए हैं ?

गंगू: बहुत अच्छा जीजीबाई। (चला जाता है)

एम. बाई: कुल चार आदमी रखना है, जिसमें अंग्रेज़ी के लेक्चरार के लिए तो दस बड़े आदमियों के प्रेशर आ गए हैं।

इस दश-कन्धर को तो रखना ही पड़ेगा। दूसरी पोलिटिक्स के लेक्चरार के लिए आपने किसी का कहा था।

नेताजी: किसी का क्या सेठानी। अपने घर का ही बच्चा है। बड़े भैया का छोकरा है। चार साल से एम.ए. करके प्राइमरी में मास्टर बना सड़ रहा है। उसको रख लेंगे। घर के घर ही में काम हो जाएगा।

मास्साब: (तनिक सकुचाते हुए) जी, अगर आपको याद हो तो एक निवेदन मैंने भी...

एम. बाई: हां-हां। हमको याद है मास्साब। मगर आपको तो सरकारी नियम मालूम ही है कि सेकंड दिवीज़न से कमवालों को लेक्चरार नहीं रख सकते।

मास्साब: पर आपने कैसे समझ लिया सेठानी कि मास्टरनी सेकंड क्लास नहीं ला पाएगी।

एम. बाई: आदमी की सूरत-शक्ल से भी तो अन्दाज़ा लग जाता है भाई। छह-छह बच्चों की साज-संभाल, बर्तन-भांडे करके कोई एम.ए. पास हो जाए और ऊपर से सेकंड दिवीज़न ले आए, हमें तो विश्वास नहीं होता।

ददाजी: बताओ, लुगाई न हुई, साक्षात सरस्वती हो गयी।

मास्साब: (ददाजी की ओर आखें तरेकर देखता है) फिर सेठानी से कहता है) आप विश्वास रखिए सेठानी। मास्टर आदमी हूँ तो क्या मास्टरों से इतना काम भी नहीं करवा पाऊँगा। आपके चरणों की कृपा से सत्तर प्रतिशत नम्बर तो दो पेपरों में अपनी आंखों के सामने डलवा कर आया हूँ। मिसराजी ने कापी खोलकर सामने रख दी थी कि अपने हाथ से नम्बर डाल लो।

एम. बाई: ठीक है तो जाने दीजिए रिज़ेल्ट। तब तक हिन्दीवाली जगह खाली रखेंगे।

नेताजी: बस, अब एक जगह बची। इकानामिक्सवाली। इसके लिए किसी को ईमानदारी से छाँट लेते हैं।

(गंगू का प्रवेश)

एम. बाई: हूँ। देख आए।

गंगू: हाँ। जी। बीस-बाईस लोग हैं फस्किलास साड़ी ब्लाउज़ टटकारे और बारह-चौदह बाबू लोग हैं बड़िया कोट-फोट टाई-माई लगाए।

ददाजी: (आश्चर्य से) बाबू लोग! भाई ये लड़कियों के कालेज में बाबू लोगों को काहे को बुलवाया इंटरव्यू के लिए ?

नेताजी: तो भाई इनमें से किसी को रखना थोड़े ही है। एक तो दस बड़े आदमियों के प्रेशरवाला केंडीडेट है, दूसरे अपने घर का बच्चा है, इन दोनों को खपाना है ना कालेज में। इस सब के लिए तमाशा बटोरा है कि इन बारह-चौदह लड़कों में से उन दो को छाँटा गया।

ददाजी: अच्छा तो ये बात है। मगर बिचारे न जाने कितनी-कितनी दूर से आए होंगे। पैसा तो खर्च होता ही है।

नेताजी: तो हमारा आपका क्या खर्च होता है ? तुम भी बेमतलब की बातें करते हो रामदीन। (मास्साब से) हाँ भाई बुलवाओ उम्मीदवारों को।

(अगले क्षण अपने डिग्री सर्टिफिकेट वगैरह समेटे हुए एक महिला अन्दर प्रविष्ट होती है। चाल-ढाल में सलीका तथा व्यक्तित्व पर्याप्त प्रभावशाली व सौम्य। लल्लू-जगधरों की आंखों में चमक)

ददाजी: (खँखारकर) बैठो बाईजी बैठो।

महिला: (बैठे हुए) थैंक्यू सर।

मास्साब: हूँ, आपका शुभ नाम ?

महिला: मिसेज़ गीता पंडित सर।

मास्साब: शिक्षा ?

महिला: आई पास्ड माई एम.ए. इन इंग्लिश लास्ट इयर। आई वाज़ ए गोल्ड मैडलिस्ट।

मास्साब: अच्छा! यू वाज़ ए गोल्ड मैडलिस्ट ?

महिला: (तनिक मुस्कुराकर) यस सर। आई वाज़।

नेताजी: (टोककर) देखिए बाईजी, अंग्रेज़ी आप तब बोलना जब क्लास में पढ़ाना। यहाँ पर हम हिन्दी में पूछ रहे हैं तो हिन्दी में ही जवाब दो। (ददाजी से) क्यों चेरसैन साब ?

ददाजी: हाँ बाईजी। आप तो हिन्दी में ही बोलिए। वो तो अंग्रेज़ी पढ़ाने के वास्ते एक मास्टर ज़रूरी लगाना है इसलिए आप इंग्रेज़ीवालों को बुलवा लिया है। नहीं तो इंग्रेज़ी भाषा से हमको घृणा है, आप जानो।

लल्लू: हाँ, असल में वो ही बात है। नहीं तो हम लोग भी इंग्रेज़ी जानते हैं। अभी आपने जो भी बोला ना, अपन सब समझ गए। (साथी से) क्यों भाई है न ?

जगधर: हाँ बिल्कुल। (नेताजी की ओर इशारा कर) अपने एमेले साब के लल्लू भैया भी तो क्या शरटिबन्द इंग्रेज़ी बोलते हैं। अपन सब समझ जाते हैं।

मास्साब: (घूरकर लल्लू को चुप बैठने का इशारा करते हुए) अच्छा तो मिसेज़ पंडित, बताइए कौन-कौन सी किताबें पढ़ी हैं आपने ?

महिला: (स्पष्ट अहसास करते हुए कि प्रश्न कुछ अजीब-सा है) जी, शिक्स्पीर, मिलटन, हिमिगवे, टामस हार्डी, चार्ल्स डिकेंस, सार्त्र, कम्, काफ़का...

मास्साब: (बीच में टोककर) हूँ। जार्ज फर्नांडीज़ की कोई किताब ?

महिला: जी, जार्ज फर्नांडीज़ तो साहित्यकार नहीं हैं।

मास्साब: हम यह नहीं पूछ रहे हैं कि कौन क्या है, क्या नहीं। बतलाइए कि आपने इनकी कोई किताब पढ़ी है या नहीं।

महिला: (तनिक घबराकर) जी, जी नहीं पढ़ी।

मास्साब: (विजेता की सी मुस्कुराहट नेताजी, ददाजी व सेठानी की ओर फेरते हुए) इधर गुलशन नन्दा की भी कुछ किताबें अंग्रेज़ी में आई हैं।

महिला: गुलशन नन्दा ?

मास्साब: (ज़ोर देकर) जी हाँ गुलशन नन्दा। हमने अंग्रेज़ी की किताबों पर उनका नाम छपा देखा है। इसके अलावा कुशवाहा कांत, प्यारेलाल आवारा, ओमप्रकाश शर्मा, कर्नल रन्जीत वगैरह दी किताबें भी अंग्रेज़ी में ज़रूर छपी होंगी... हम तो इतने बिजी रहते हैं कि सब देख नहीं पाते। मगर आप अंग्रेज़ी के प्रोफेसर के लिए आई हैं, आपको पढ़ना था। आपने इतने सारे अंग्रेज़ी लेखकों के नाम गिना दिए, आपको दो-चार हिन्दुस्तानी लेखक भी पढ़ना था। मतलब साफ है कि आप अंग्रेज़ीपरस्त हैं। देश से आपको कोई प्यार नहीं।

महिला: जी मैंने देशी-अंग्रेज़ी लेखकों को भी पढ़ा है। मसलन, आनन्द, कमला मार्कंडेय, खुशवंतसिंह, नीरद चौधरी...

एम. बाई: (बीच में टोक देती है। मानो अचानक याद आया हो कि उन्हें भी कुछ पूछना है) अच्छा, हटाओ। तुम्हारी उमर कितनी क्या है बाई ?

महिला: (महसूस करते हुए कि सवाल विचित्र है) जी उम्र सर्टिफिकेट में लिखी है। मैंने दरखास्त के साथ लगाया था।

एम. बाई : सारटिफिकेट का क्या विश्वास जी। सब गलत-सलत लिखा रहता है। हमारी अपनी छोकरी की चार साल कम लिखी है। हमने भी छठवी पास की है। पुराने ज़माने की छठवी। हमारी खुद गलत लिखी थी। पूरे छह साल ज़्यादा लिख दी थी मास्टर ने। (अचानक) अच्छा बताना तो ज़रा हम कितने के लगते हैं ?

महिला : (गौर से देखते हुए) जी, करीब पचास।

(सेठानी के चेहरे पर कड़वाहट)

लल्लू: क्या बात करती हो बाईजी आप ? (सेठानी के चेहरे की ओर देखते हुए) हमारी सेठानी पैंतीस से एक दिन बड़ी नहीं दिखती। वो तो आज चश्मा लगाए हैं, नहीं तो चश्मा उतारकर दूर से देखो तो पच्चीस से ज़्यादा कोई ना कहे।

(साथी से) क्यों भाई ?

जगधर : बिल्कुल। परसों सेठानी छत पर खड़ी थी। नहाके बाल सुखा रही थी, मैंने पीछे से देखा तो पहचान ही नहीं पाया। मैं समझा कोई अठारह-बीस की छोकड़ी है जो सेठानी के यहाँ मेहमान आई है। मगर मुड़ीं तो सेठानी थीं। मैं तो देख के चकरा गया। (महिला से) आपको चश्मा नहीं लगता पंडताइन बाई ?

(मास्साब घूरकर लल्लू जगधरों को चुप रहने का इशारा करता है)

लल्लू: (जवाब में मास्टर की ओर आँखें तरेरकर देखता है) अच्छा, ये साड़ी आपने कहाँ से खरीदी बाईजी ? क्या कहते हैं खूब फव रही है। (साथी) क्यों भाई ?

जगधर: हाँ बहुत बढ़िया है। बिलाउज का कपड़ा भी उम्दा है (नेताजी की ओर इशारा करके) अपने एमले साब के लल्लू भैया बम्बई गए थे तो लाए थे ऐसा ही उम्दा कपड़ा। हमने पूछा कि टैरालीन है क्या तो बोले कि टैरालीन का बाप है। बीस रुपए गज आता है।

मास्साब: भाई, आप लोग ज़रा सवाल तो पूछने दीजिए।

लल्लू: तो हम लोग भी सवाल ही तो पूछ रहे हैं।

नेताजी: पर भाई, मास्साब एक्सपर्ट हैं। एक्सपर्ट को सवाल पूछने दीजिए।

लल्लू: पर अभी-अभी आपने कहा था भैयाजी कि पबलक सरबस कमीशन में दूसरे मेम्बर लोग भी सवाल पूछते हैं।

मास्साब: (चिढ़कर) मगर यार, ज़रा समझदारी के सवाल पूछते हैं।

जगधर: तो हम बेवकूफी के सवाल पूछते हैं ?

मास्साब: और नहीं तो क्या ? गाँवारी दिखा रहे हो बेकार की।

लल्लू: अच्छा ! हम गमारी दिखा रहे हैं और आप बड़े समझदार की पूछ बने बैठे हो ?

नेताजी: भाई आप लोग ज़रा शांत तो बैठो।

लल्लू: काहे को बैठो जी शांत। हम लोगों को क्या आलतू-पालतू समझ रखा है। नगद रुपया डाला है तब बैठे हैं।

मास्साब: कितना रुपया डाला है यार तुमने ?

लल्लू: वो जितना भी डाला हो। तुमने क्या दिया है ? फोकट में यहाँ हुलुर-हुलुर कर रहे हो। (साथी से) क्यों भाई ?

जगधर: बिल्कुल। तीन कौड़ी के मास्टर एक्सपर्ट बने बैठे हैं। कालेज के मालिकों पर ताव दखा रहे हैं

मासाबा: (उठकर खड़ा हो जाता है) ए रामखिलावन, ज़बान सँभालकर बोलना हाँ

Lisez bien tout le texte sans essayer de comprendre tous les mots mais en cherchant à bien comprendre le cours du récit. Quelques mots pour vous aider : इस दश-कन्धर को : celui des dix appuis (qui a les recommandations) ; निवेदन m, requête ; सेकंड दिवीज़न 2^{ème} classe pour le niveau (B seulement) dans le système d'évaluation indien, où les points sont sur 100 (donc exprimés en pourcentage) ; कोट, टाई, = coat, tie (angl) ; गुलशन नन्दा : auteur hindi très populaire (a fourni de nombreux scénarios au cinéma commercial) aussi célèbre dans le genre que Amitabh Bacchan, mais qui ne figure pas dans les auteurs à connaître des programmes littéraires... ; उम्दा superbe, गज़ : mesure (métrage des tissus, un peu moins d'un mètre). पबलक सरबस कमीशन public service commission (angl. accent rural) : टोककर interrompant, coupant la parole

1. Le comité de sélection doit pourvoir des postes : combien, lesquels ?
2. Quel poste reste vacant avant l'entretien d'embauche ?
3. Quels sont les critères de recrutement d'après la réunion interne qui précède l'audition ?
4. Pendant l'entretien, parmi les questions posées à la candidate, lesquelles jugez-vous 'normales' ?
5. Lesquelles jugez-vous déplacées et pourquoi ?
6. Relevez les termes anglais et donnez leur sens. 7 . traduisez les phrases soulignées
8. Relevez (et situez) les références culturelles estimées nécessaires par les examinateurs, par la candidate.
9. Il y a une dimension parodique à ce texte : relevez quelques uns des procédés qui y contribuent
10. Donnez un titre à l'ensemble du texte (hindi, en français)